दिनांक :- 18-04-2020
कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा
स्नातक :- द्वितीय खंड कला
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)
इकाई :- दो
पत्र - चतुर्थ
अध्याय :- अफीम युद्ध (1839, 1856)

यूरोपीय व्यापारी की में यह विश्वास उत्पन्न हो गया था कि वे एशिया तथा अफ्रीका के निवासियों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ तथा उत्कृष्ट है। किंतु चीनी प्रशासन विदेशी व्यापारियों को बर्बर जाति का समझता था और उनका निरंतर अपमान करना था। चीन का यह दृढ़ विश्वास था कि संपूर्ण मानव जाति उनके स्वर्गिक साम्राज्य के अधीन होनी चाहिए चीनी प्रशासन संपूर्ण विदेशी व्यापारिक संबंध समानता के आधार पर स्वीकार नहीं करता था। उसका व्यवहार एक स्वामी का था जो अत्यंत कृपापूर्वक व्यापार करने की आज्ञा प्रदान करता था। प्रशासन यह मानने को तैयार न था कि

लार्ड नेपियर एक सभ्य या शक्तिशाली देश का प्रतिनिधित्व करता था। चीन अपने को सभी राष्ट्रों से सर्वो परि समझता था और मध्यवर्ती राज्य कहलाता था।

कैंटन में अँग्रेज मुख्य व्यापारी थे जिन्हे ब्रिटिश सरकार का वरदहस्त प्राप्त था। अमरीकी व्यापारियो के साथ ऐसी कोई बात नही थी। उनका संपर्क गैर-राजन्य (Non-diplomatic) और गैर राजनीतिक (non-political) था वे शान्तिमय ढंग से व्यापार करने चाहते थे। अतः जब कैंटन में ब्रिटिश व्यापार बन्द कर दिया गया तो अमरीकी व्यापारी वहाँ व्यापार करते रहे।

कैंटन में ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को खत्म कर दिया था तथा वहाँ का व्यापार सभी अँग्रेज व्यापारियों के लिए खोल दिया था। सरकार वहाँ ब्रिटिश व्यापारिक हितों के प्रोत्साहन और

Scanned with CamScanner

सुरक्षा के लिए कृतसंकल्प थी यह मुख्यतः ब्रिटिश उपनिवेशवाद का तकाजा था। इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात हो चुका था। इसे कच्चे माल और बाजार की आवश्यकता थी। चीन इस आवश्यकता की पूर्ति कर सकता था। जुलाई, 1834 में लार्ड नेपियर मकाओ पहुँचा। वह चीन में ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधि था जिसका मुख्य काम वहाँ ब्रिटिश व्यापारिक हितों की रक्षा करना था। वह कोहंग के व्यापारियों से मिलने की अपेक्षा सीधे कैंटन के वायसराय से मिला। नेपियर अपने अनुदेशों का पालन कर रहा था और चीनी अपनी प्राचीन प्रथा को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील थे। विदेशियों के साथ संपर्क कायम करने के समान्य सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए वायसराय ने बतलाया, बर्बर लार्ड नेपियर व्यापारिक उद्देश्य से कैंटन आया है। हमारा स्वर्गिक साम्राज्य लोगों पर शासन करने के लिए असैनिक पदाधिकारियों तथा

दुर्जनों को डराने - धमकाने के लिए सैनिकों को नियुक्त करता है। किंतु व्यापार जैसे तुच्छ कार्य के लिए कोई अधिकारी न होता। यह काम स्वयं व्यापारी ही कर लेते हैं। यदि बर्बर विदेशियों के व्यापार विनियमों में कुछ परिवर्तन करना है तो इस संबंध में हांग व्यापारी आपस में बातचीत करें तथा शुल्काधीक्षक और मेरे कार्यालय में एक संयुक्त वक्तव्य भेजें। तब बर्बर विदेशियों को सरकारी तौर पर बताया जाएगा कि प्रस्तावों को स्वीकृत या अस्वीकृत किया जाएगा। पुनः यह बात लाया गया। स्वर्गिक साम्राज्य के उच्च पदाधिकारी को विदेशी बर्बरों से व्यक्तिगत ढंग से कोई बातचीत करने या पत्र लिखने की इजाजत नहीं है। यदि बर्बर मुखिया लार्डनेपियर मुझे कोई पत्र भेजता है, तो मैं उसे न प्राप्त करूँगा और दे सकूँगा ही। बर्बर व्यापारी कैंटन की उद्योगशाला में रहें।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि चीनी अधिकारी किसी भी स्थिति में व्यापार के राजनीतिक रंग देना नहीं चाहते थे। वायसराय के साथ प्रत्यक्ष संपर्क कायम करने में लार्ड नैपियर असफल रहा। कैंटन में उसकी उपस्थिति चीनी व्यापारियों को खलने लगी। इसी बीच वह बीमार पड़ा और मुकाओ लौट आया जहाँ उसका निधन हो गया।

लार्ड नैपियर के निधन के पश्चात् श्री० वी० डेविस ने उसका पद सँभाला। किंतु वह अधिक दिनों तक अपने पद पर बना नहीं रहा। उसकी जगह जार्ज बी० राबिन्सन आया। डेविस इलियट और राबिन्सन नैपियर के सहयोगी रह चुके थे। उनका उत्तराधिकारी कप्तान इलियट बना जो मुख्याधीक्षक था। कुछ वर्षों तक चीन के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। इस बीच मकाओ से ब्रिटिश ब्रिटिश अधीक्षक ने व्यापार की देखभाल की।

कैंटन में ब्रिटिश व्यापार के विनिमय का पूरा प्रश्न पुनः 1838 में उठाया गया। उसी वर्ष चीनी सम्राट ने लिन-त्से-सू नामक एक बड़े पदाधिकारी को कैंटन का आयुक्त नियुक्त किया। उसे ब्रिटिश व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को लागू करने का आदेश दिया गया। 10 मार्च, 1839 को कैंटन पहुँचते ही लिन ने वहाँ की स्थिति का अध्ययन किया। कैंटन ने उसने विदेशी व्यापारियों के समस्त व्यापारिक संस्थानों पर लिन न कड़ा पहरा बैठाया उसने अफीम का समस्त स्टॉक सौंप देने के लिए दबाव डाला। विदेशी व्यापारियों को सूचित किया गया कि वे जब तक अफीम के समस्त स्टॉक प्रशासन को सुपुर्द नहीं कर देते तब तक उन्हें कैंटन से जाने की इजाजत नहीं है विवश होकर अँग्रेज व्यापारियों ने लगभग 20 हजार पेटी चीनी आयुक्त को सौंप दिया। अफीम को चूर्ण

और नमक से मिलाकर समुद्र में फेंक दिया गया। 60 लाख डालर के मूल्य के इस अफीम को इस प्रकार नष्ट होते देख कर अँग्रेज व्यापारियों के क्रोध की सीमा न रही। लिन ने इस अँग्रेज व्यापारियों से इस बात का लिखित आश्वासन भी माँग कि वे भविष्य में अफीम चीन में नहीं लाएँगे। उन्होंने ऐसा ही किया। किंतु उन्होंने व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने और विनष्ट अफीम की क्षतिपूर्ति के लिए अपनी सरकार पर दबाव डाला। उन्होंने युद्ध की भी माँग की।

(4) राज्यक्षेत्रतीत अधिकार (Extra-territorial Rights)- कैंटन में निवास करने वाले विदेशी व्यापारी चीन के कानून के अधीन थे। परंतु विदेशी व्यापारियों को चीन का कानून अमानवीय प्रतीत होता था। पश्चिमी कानून के अनुसार व्यक्ति के अधिकारों की मान्यता थी जबकि चीन में सामूहिक दायित्व का सिद्धांत था। जब कभी अँग्रेज अपराधियों की सुनवाई चीनी अदालत में होती है।